

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंधानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत उच्च स्थान प्राप्त है। नारी के अनेक रूप होते हैं। बेटी के रूप में माता-पिता के आंख की पुतली के समान रहती है। वह माता-पिता के संस्कारों को ग्रहण करती है और भावी जीवन का निर्माण करती है। विवाह के उपरान्त पति के घर जाकर एक पत्नी के रूप में पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। पत्नी के रूप में वह संतति वृद्धि करती है। माता के रूप में बच्चों की गुरु होती है। बच्चों में संस्कार डालने का कार्य माता करती है। दादी के रूप में बच्चों में अपने अनुभव का संचार करती है। इस प्रकार नारी के अनेक रूप हैं और सभी रूपों में वह अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करती है।

नर और नारी समाज रूपी रथ के पहिए के समान है। दोनों पहिए यदि मजबूत रहते हैं तो परिवार की गाड़ी ठीक ढंग से चलती है। इसलिए नारी का सम्मान होना चाहिए। आजकल प्रायः यह देखा जा रहा है कि लोग भ्रूण परीक्षण के द्वारा कन्या भ्रूण की हत्या करवा देते हैं। यह देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। स्त्री और पुरुष का अनुपात सृष्टि में पचास-पचास प्रतिशत का होना चाहिए। सृष्टि को संतुलित रखने और चलाने के लिए यह अनुपात बहुत आवश्यक है। किन्तु भ्रूणहत्या के कारण यह संतुलन बिगड़ता जा रहा है। जब बेटी ही नहीं रहेगी तो संसार कैसे चलेगा? बेटा और बेटी का समान दर्जा होना चाहिए।

भारत में यह संतुलन धीरे-धीरे गड़बड़ाता चला जा रहा है। सबसे बड़ा कारण है दहेज प्रथा। दहेज का दानव समाज में बढ़ता जा रहा है यह एक प्रकार का सामाजिक अभिषाप है। लड़की की शादी के समय लड़की के परिवार वालों के द्वारा लड़के या उसके परिवार वालों को नगद या किसी भी प्रकार की किमती वस्तु बिना मूल्य में देने को दहेज कहा जाता है। दहेज एक सामाजिक समस्या है। यह गैरकानूनी है, फिर भी समाज में खुलेआम चल रही है। यह प्रथा बहुत प्राचीनकाल से भारतीय समाज में व्याप्त है। किन्तु पहले इसका इतना विकृत

रूप नहीं था जितना आज है। पहले लोग इच्छानुसार लड़की को पति के घर जाते समय उसके साथ कुछ वस्तुएं उपहार के रूप में दिया करते थे। लेकिन आज लड़की के विवाह में दहेज देना बाध्यकारी हो गया है।

समाज में हर व्यक्ति के लड़के और लड़की होते हैं। हर व्यक्ति इस समस्या से ग्रसित है। जब लड़के का विवाह होता है तो वह दहेज लेता है और बहुत प्रसन्न होता है। जब लड़की का विवाह करता है तो उसे दहेज देना पड़ता है और उस समय उसे बहुत कष्ट होता है। इस समस्या से समाज के हर वर्ग के लोग परेशान हैं, फिर भी इसको छोड़ना नहीं चाहते। महात्मागांधी ने कहा था जो भी व्यक्ति दहेज को शादी की जरूरी शर्त बना देता है, वह अपने शिक्षा और अपने देश को बदनाम करता है और पूरी महिला जाति का भी अपमान करता है। दहेज प्रथा का प्रचलन समाज के हर वर्ग में है। जो जितना बड़ा अधिकारी या जितना अधिक पैसे वाला है वह शादी विवाह में उतना अधिक दहेज प्राप्त करने की इच्छा रखता है। इसलिए यह कहना कि अज्ञानता के कारण यह प्रथा चल रही है ठीक नहीं है।

आजकल लोगों की यह मानसिकता बन गई है कि पढ़ाई—लिखाई में जितना पैसा खर्च हुआ है वह दहेज के माध्यम से वसूल लिया जाये। यह प्रथा इसीलिए बढ़ती जा रही है। लड़के और लड़कियां दोनों ही समाज के कर्णधार हैं। दोनों का बराबर अधिकार है। लेकिन समाज की गिरी हुई सोच के कारण यह माना जाता है कि बेटी पराया धन है और विवाह होने के बाद वह दूसरों के घर चली जायेगी। यह सोचकर कुछ लोग बेटी को अधिक पढ़ाते—लिखाते नहीं। किन्तु जो लोग इस सोच से परे हैं और लड़कियों को उच्च शिक्षा देकर उसका जीवन निर्माण करते हैं वे प्रगतिशील विचारों के होते हैं। नारी जाति को ईश्वर का यह वरदान है कि वह करुणा की मूर्ति है। हर समाज में अपने को संतुलित रखकर के आगे बढ़ सकती है। जब बेटी ससुराल जाती है तो माता—पिता का जितना ध्यान रखती है पुत्र उतना कभी नहीं रखता। पुत्री कभी भी मायके की बुराई सुनना नहीं पसंद करती।

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा, सेना, न्याय, चिकित्सा और प्रशासनिक सेवाओं में लड़कियां लड़कों से आगे जा रही हैं। नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार भी पर्यासरत है। स्त्री शिक्षा

पर सरकार खुब पैसा खर्च कर रही है। हर क्षेत्र में स्त्रीयों को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकारी विद्यालयों में बेटियों को पढ़ाने के लिए निःशुल्क शिक्षा सरकार के द्वारा की गई है। बेटि किसी भी रूप में बेटों से कम नहीं है। पढ़ी-लिखी बेटि ही दोनों कुलों को रोशन करती है। नारी सृष्टि को चलाती है। यदि भ्रूण में ही उसका विनाश कर दिया जाये तो सृष्टि कैसे चलेगी। भ्रूण हत्या महापाप है। सरकार के द्वारा भी इस पर कठोर कानून बनाया गया है और सजा का प्रावधान है। बेटि बचाओ और बेटि पढ़ओ का विचार बहुत ही समसामयिक है। इसके प्रति जन जागरूकता होनी चाहिए।